Department of political science
D. B. college, Jaynagar.

By. DR. A.K. Yadav
Asstt prof G.P.T.T
political science

B.A-III — pub. Ad.

Date — 08-10-2020

Lecture-No- 08 And 9

समन्वय
(co-ordination)

समन्वय संगठन का महत्वपूर्ण सिद्धांत है जिसके बिना संगठन के विभिन्न कार्य आपस में असंगठित हो जाते है और एक की प्राप्ति का लाभ दूसरे को नहीं मिल पाता। विचारक मूने का कहना है कि — "समन्वय संगठन का प्रथम सिद्धांत है जिसके द्वारा संगठन के अन्य सिद्धांतो को क्रियान्वित किया जाता है तथा समन्वय द्वारा संगठन के आंतरिक उद्देश्यो को स्पष्ट किया जाता है।"

संगठन को विभिन्न प्रकार कार्यों का सम्पादन करना पड़ता है और उनमे संलग्न लोगों मे कार्य की प्रकृति एवं मनोवृत्ति भी एक समान नही होती है। ऐसी स्थिति में उनके बीच तनाव का जन्म स्वाभाविक है जिसका समाधान वरीय पदाधिकारी द्वारा कराया जाता है। उसे ही समन्वय का नाम दिया जा सकता है। दूसरी ओर संगठन या प्रशासन के लक्ष्य के लिए भी जरूरी है कि संगठन या प्रशासन मे संलग्न व्यक्ति एक वरीय पदाधिकारी जिसे मुख्य निष्पादक या मुख्य कार्यपालक का नाम दिया जा सकता है, के निर्देशन मे कार्य करें और पूरा संगठन या प्रशासन नियमित रूप से उसके निर्देशन में काम करने लगता है, तो उसे भी समन्वय या समायोजन का नाम दिया जा सकता है।

समन्वय के दो पहलू है — (I) नकारात्मक — और
(II) सकारात्मक

अपनी नकारात्मक भूमिका के रूप मे समन्वय क्रिया दोहराव को रोकती है और सकारात्मक भूमिका के रूप में समन्वय की क्रिया संगठन की कर्मचारियों में मिल-जुलकर सहयोगपूर्वक कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास करती है। हेनरी फेयोल ने तो समन्वय को मुख्य कार्यपालिका या मुख्य प्रबन्धक का एक महत्वपूर्ण कार्य माना है। उसके कथनानुसार "समन्वय करने का अर्थ है एक संगठन की क्रियाओं में एकरूपता लाना ताकि उसका कार्य सरल हो जाए और वह सफलता प्राप्त कर सके।" सैकलर हडसन के अनुसार — "समन्वय कार्य के विभिन्न भागों को आपस में सम्बन्धित करने का महत्वपूर्ण कर्तव्य है।"

Scanned with CamScanner

अब एक सामान्य प्रश्न उठता है कि क्या समन्वय और सहयोग एक ही है। परन्तु गहनता के साथ विचार करें तो दोनों में अन्तर की है। सबसे पहले जब समन्वय और सहयोग के बीच सम्बन्ध को रेखांकित करते हैं तो पाते हैं कि दोनों एक सिक्के के दो पक्ष हैं, बिना सहयोग के समन्वय सम्भव नहीं है, क्योंकि कोई भी वरीय पदाधिकारी जब संगठन में समन्वय करना चाहता है तो जरूरी यह भी है कि संगठन में संलग्न व्यक्तियों का वरीय अधिकारी के आदेश के प्रति उत्तरदायित्व हो और वे उसके आदेश के पालन में सहयोग दे, यदि वरीय पदाधिकारी के आदेश का पालन नहीं किया जाता है, तो समन्वय सम्भव ही नहीं है। इसी और कभी-कभी सहयोग और समन्वय विपरित भूमिका निभाते हैं और परिणाम होता है कि दोनों के बीच तालमेल नहीं रह पाता। यहाँ टैरी के द्वारा दिये गये एक रोचक उदाहरण को दोहराया जा सकता है — एक लड़का सुबह चार बजे की रेलगाड़ी पकड़ने के लिए अपनी घड़ी का एलार्म तीन बजे का लगा देता है। उसके बाद उसके पिता जी उसी की सुविधा को ध्यान में रखते हुए घड़ी को आधा घंटा और पहले व्यवस्थित करते हैं, ताकि बच्चा तीन के बदले ढ़ाई बजे ही जग जाए, फिर माँ अपने बच्चे की सुविधा को ध्यान में रखते हुए घड़ी की सुई और आधा घण्टा पहले व्यवस्थित कर देती है ताकि बच्चा दो बजे रात में ही जग जाए। अब जो बच्चा 12 बजे सो गया अपने जगने के निर्धारित समय से बहुत पहले ही जग गया और उसका कार्यक्रम बिगड़ जाता है। कहने का मतलब है कि बच्चा तो खुद ही सावधान था और माता-पिता की सावधानी दिखाएं भी सहयोग किया, लेकिन इन तीनों के बीच समन्वय का अभाव रहा और परिणाम हुआ कि बच्चे की सोने की क्रिया में अनावश्यक खलल पड़ा। इस प्रकार यहाँ स्पष्ट हुआ कि सहयोग और समन्वय को एक नहीं माना जा सकता। समन्वय प्रत्येक संगठन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। संगठन अपने अस्तित्व, सफलता, सार्थकता एवं प्रभावशीलता के लिए बहुत हद तक समन्वय पर निर्भर करता है।

End:-

Scanned with CamScanner